SHRI JAGDISH 'JOSHILA'

Shri Jagdish 'Joshila' is a notable literary figure and a pioneer of Nimadi literature, widely recognized as the first and only Nimadi novelist in India. He is also acknowledged as the father of prose in Nimadi literature for being the first to create prose in the language. His contributions to Hindi and Nimadi literature over the last five decades have helped preserve and promote the rich culture and heritage of the Nimad region. His works reflect a deep connection to his roots and highlight the historical and cultural significance of his homeland.

2. Born on 3rd June, 1949, Shri Joshila holds a strong command of both Hindi and Nimadi languages. He began his literary journey with a passion for storytelling and a commitment to document the lives of unsung heroes. Over the years, he has authored 56 books- 28 in Hindi and 28 in Nimadi-establishing himself as a writer, researcher, and historian. His research on martyrs and the freedom struggle in the Nimad region is highly respected and has made a significant contribution to regional history.

3. Shri Joshila's work extends beyond literature to research on India's independence movement and the history of lesser-known martyrs. His novels and historical writings have inspired countless readers and researchers to explore the untold stories of the Nimad region. His writing style, blending creativity with historical accuracy and factual depth, has earned him a place among India's most respected regional writers. His literary work has had a great impact on Indian regional literature and continues to inspire future generations of writers.

4. Shri Joshila has been honoured with numerous awards by the Madhya Pradesh Sahitya Academy including the Eeswari Award (2007) for his literary achievements, the Pandit Balakrishna Sharma 'Naveen' Award (2016) for his significant contributions to Hindi literature and the Sant Singaji Award (2019) for his work in regional literature and history. He has been also honoured by various literary organizations across the country.

श्री जगदीश 'जोशीला'

श्री जगदीश 'जोशीला' एक उल्लेखनीय साहित्यिक हस्ती और निमाड़ी साहित्य के अग्रदूत हैं, जिन्हें भारत में पहले और एकमात्र निमाड़ी उपन्यासकार के रूप में व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है। उन्हें निमाड़ी साहित्य में गद्य के जनक के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि वे इस भाषा में गद्य की रचना करने वाले पहले व्यक्ति थे। पिछले पाँच दशकों में हिंदी और निमाड़ी साहित्य में उनके योगदान ने निमाड़ क्षेत्र की समृद्ध संस्कृति और विरासत को संरक्षित और बढ़ावा देने में मदद की है। उनकी रचनाएँ उनकी जड़ों से गहरे जुड़ाव को दर्शाती हैं और उनकी मातृभूमि के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को उजागर करती हैं।

2. 3 जून, 1949 को जन्मे, श्री जोशीला हिंदी और निमाड़ी दोनों भाषाओं पर अच्छी पकड़ रखते हैं। उन्होंने अपनी साहित्यिक यात्रा कहानी कहने के जुनून और गुमनाम नायकों के जीवन को दस्तावेज के रूप में दर्ज करने की प्रतिबद्धता के साथ शुरू की। पिछले कुछ वर्षों में, उन्होंने 56 किताबें– 28 हिंदी में और 28 निमाड़ी में लिखी हैं और खुद को एक लेखक, शोधकर्ता और इतिहासकार के रूप में स्थापित किया है। निमाड़ क्षेत्र में शहीदों और स्वतंत्रता संग्राम पर उनके शोध को बहुत सम्मान मिला है और इसने क्षेत्रीय इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

3. श्री जोशीला का काम साहित्य से परे भारत के स्वतंत्रता आंदोलन और कम ज्ञात शहीदों के इतिहास पर शोध तक फैला हुआ है। उनके उपन्यासों और ऐतिहासिक लेखन ने असंख्य पाठकों और शोधकर्ताओं को निमाड़ क्षेत्र की अनकही कहानियों के समन्वेषण के लिए प्रेरित किया है। उनकी लेखन शैली, रचनात्मकता को ऐतिहासिक सटीकता और तथ्यात्मक गहराई के साथ मिलाते हुए, उन्हें भारत के सबसे सम्मानित क्षेत्रीय लेखकों में स्थान दिलाया है। उनके साहित्यिक कार्यों का भारतीय क्षेत्रीय साहित्य पर बहुत प्रभाव पड़ा है और यह लेखकों की भावी पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा।

4. श्री जोशीला को मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी द्वारा कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिसमें उनकी साहित्यिक उपलब्धियों के लिए ईश्वरी पुरस्कार (2007), हिंदी साहित्य में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए पंडित बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' पुरस्कार (2016) और क्षेत्रीय साहित्य और इतिहास में उनके काम के लिए संत सिंगाजी पुरस्कार (2019) शामिल हैं। उन्हें देश भर की विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा भी सम्मानित किया जा चुका है।